IJCRT.ORG ISSN : 2320-2882

INTERNATIONAL JOURNAL OF CREATIVE RESEARCH THOUGHTS (IJCRT)

An International Open Access, Peer-reviewed, Refereed Journal

भाषा विकास और नोम चोम्स्की

(Language Development and Noam Chomsky)

डॉ सोमेश नारायण सिंह

विभागाध्यक्ष शिक्षा संकाय

हंडिया पी॰जी॰कॉलेज हंडिया प्रयागराज उत्तर प्रदेश

मनुष्य एक सामाजिक प्राणी है और समाज में एक दूसरे के विचार को ग्रहण करने के लिए मानव को किसी न किसी माध्यम की आवश्यकता होती है विचार बिन में के इन साधनों में साधारणतया संकेतों भाव मुद्रा और भाषा का प्रयोग होता है परंतु विचारों के आदान-प्रदान का सबसे सरल सुगम और सर्वव्यापी साधन भाषा ही है भाषा के माध्यम से व्यक्ति अपने विचारों को दूसरे तक पहुंचाता है एवं दूसरे के विचारों को समझ सकता है शब्द भाषा है व्यक्ति के मनोभावों को शीघ्रता से अस्पष्टता और निश्चिता के साथ अभिव्यक्त कर सकती है व्यक्ति के व्यक्तित्व की प्रभावशीलता उसके भाषा कौशल पर आधारित होती है व्यक्ति के सफलता में भाषा का महत्व पूर्ण योगदान होता है सामान्यता भाषा के 6 प्रकार हैं मातृभाषा क्षेत्रीय भाषा राष्ट्रभाषा प्राचीन भाषा विदेशी भाषा तथा अंतर्राष्ट्रीय भाषा जिस भाषा को मालक जन्म से माता पिता एवं पारिवारिक सदस्यों के संपर्क से सीखता है वह मात्रिभाषा होती है इसी तरह समाज से सीखी गई भाषा क्षेत्रीय भाषा सरकारी कामकाज की भाषा राष्ट्रीय भाषा सांस्कृतिक क्षेत्र की भाषा प्राचीन भाषा सभी देशों द्वारा मान्य अंतरराष्ट्रीय भाषा एवं विभिन्न देशों या विभिन्न क्षेत्रों में बोली जाने वाली विदेशी भाषा होती है

भाषा विकास (Language development) ऐसी प्रक्रिया है जो मानव जीवन में बहुत पहले आरम्भ हो जाती है। नवजात बिना किसी भाषा के जन्म लेता है किन्तु मात्र १० मास में ही बोली गयी बातों को अन्य ध्वनियों से अलग करने में सक्षम हो गया होता है। विकास एक प्रक्रिया है जिसे मानवीय जीवन की शुरुआत में शुरू किया जाता है। शिशुओं का विकास भाषा के बिना शुरू होता हैए फिर भी 10 महीने तकए बच्चे भाषण की आवाज को अलग कर सकते हैं और वे अपनी मां की आवाज़ और भाषण पैटर्न पहचानने लगते है और जन्म के बाद अन्य ध्वनियों से उन्हें अलग करने लगते है। आम तौर परए भाषा को प्रारंभिक संचार के एक चरण के साथ शुरू करने के लिए माना जाता है जिसमें शिशु दूसरों के लिए अपने इरादों को व्यक्त करने के लिए इशारों और बोलने का उपयोग करते हैं विकास के एक सामान्य सिद्धांत के अनुसारए नए रूप तब पुराने कार्यों पर ले जाते हैंए ताकि बच्चों को उसी बातचीतत्मक कार्य को व्यक्त करने के लिए शब्द सीख सकेंए जो कि वे पहले से ही विभिन्न साधनों द्वारा व्यक्त किए हैं।

नोअम चाम्सकी का जन्म अमरीका में फिलाडेल्फिया प्रांत के इस्ट ओक लेन में हुआ था। उनके पिता यूक्रेन में जन्मे श्री विलियम चामस्की (1896-1977) थे जो हीब्रू के शिक्षक एवं विद्वान थे। उनकी माता एल्सी नाम्सकी (शादी से पूर्व सिमनाफ्सकी) बेलारूस से थीं, लेकिन वे अमरीका में ही पली बढ़ी

थीं। हलाकि उनकी मातृभाषा यीडिश थी, लेकिन चाम्सकी का कहना है कि घर में यीडिश बोलना गुनाह समझा जाता था। चाम्सकी के अनुसार वे एक "यहूदी घेटो" में रहते थे जो यीडिश और यहूदी घेटो में आंतरिक तौर पर विभक्त था और उनका परिवार यहूदियों के साथ यहूदी संस्कृति के साथ बसर करता था। चाम्सकी का यह भी कहना है कि 1930 के दशक में अक्सर आयरिश कैथोलिक एवं एवं दजप. मउपजपेउ के बीच उन्होंने खुद काफी तनाव भरी ज़िंदगी गुजारने का अनुभव किया है। "

फिलाडेल्फिया के सेंट्रल हाई-स्कूल से 1945 में पास करने के बाद चाम्सकी ने पेंसिलवानिया विश्वविद्यालय में दर्शनशास्त्र एवं भाषाविज्ञान का अध्यन शुरु किया। यहाँ भाषावैज्ञानिक जेलिंग हैरिस, एवं दार्शनिक वेस्ट चर्चमैन तथा नेल्सन गुडमैन जैसे उदभट विद्वान उनके गुरु थे। चाम्सकी ने अपने भाषावैज्ञानिक गुरु श्री हैरिस से उनके द्वारा प्रतिपादित प्रजनक भाषाविज्ञान के ट्रांसफार्मेशन सिद्धांत को सीखा जिसकी बाद में चाम्सकी ने अपनी व्याख्या की और कांटेक्सट फ्री ग्रामर के सिद्धांतों का प्रतिपादन किया। कहा जाता है कि चाम्सकी के राजनैतिक विचारों को आधार देने में श्री हैरिस की काफी महत्वपूर्ण भूमिका रही है।

1949 में चाम्सकी का विवाह भाषावैज्ञानिक कैरोल स्काट्ज से संपन्न हुआ जिनसे उन्हें दो बेटियाँ अवीवा (जन्म 1957) एवं डाएन (जन्म 1960) तथा एक पुत्र हैरी (जन्म 1967) की प्राप्ति हुई।

चाम्सकी को पेंसिलवानिया विश्वविद्यालय से 1955 में डाक्टरेट की उपाधि प्राप्त हुई। उन्होंने अपने शोध का काफी महत्वपूर्ण हिस्सा हार्वड विश्वविद्यालय से हार्वड जूनियर फेलो के रूप में पूरा किया था। उनके डाक्टरेट उपाधि के लिए किया गया शोध बाद में पुस्तकाकार रूप में 1957 में सिंटैक्टिक स्ट्रक्चर्स सामने आया जिसे उस समय तक की श्रेष्ठ पुस्तकों में शुमार किया गया। 1955 में ही चाम्सकी ने एमआईटी यानि मसाचुएट्स तकनीकी संस्थान में नियुक्त हुए और 1961 में उन्हें आधुनिक भाषा एवं भाषाविज्ञान विभाग (अब भाषाविज्ञान एवं दर्शनशास्त्र विभाग) में फुल प्रोफ़ेसर का दर्जा दिया गया। 1966 से 1976 तक वे *फेरारी पी वार्ड* प्रोफेसर रहे और 1976 में इंस्टीट्यूट प्रोफेसर नियुक्त हुए। 2007 के स्थिति के अनुसार वे लगातार 52 वर्षों तक एमआईटी में प्राध्यापन का काम कर चुके हैं।

फरवरी 1967 में, जब उनका लेख द रिस्पांसिबिलीटी ऑफ इंटेलेक्चुअल्स प्रकाशित हुआ, चामस्की वियतनाम युद्ध युद्ध के प्रखर आलोचकों में शामिल हो चुके थे। *द न्यूयार्क रिव्यू ऑफ बुक्स* में. इसके बाद 1969 में उनकी एक और पुस्तक अमेरिकन पावर ऐंड द न्यू मैंडरिन्स आई, जो एक निबंध संग्रह था जिसने उन्हें अमरीकी सत्ता के प्रखर विरोधियों की कतार में ला खड़ा किया। अमरीकी विदेशे नीतियों की उनकी प्रखर आलोचना ने उन्हें अमरीकी मीडिया में काफी विवादास्पद बना दिया। पूरी दुनिया की मीडिया एवं प्रकाशन जगत में उनकी काफी माँग है।

चाम्स्की को सत्ता प्रतिष्ठानों की ओर से हमेशा भय एवं खतरों का सामना करता है, उन्हें मौत की धमकी तक दी जा चुकी है एवं खुफिया पुलिस हमेशा उनके इर्द-गिर्द रहती है। चामस्की अपने हर पत्र को खोलने से पहले उसकी विस्फोटक जाँच करवाते हैं।

चाम्सकी आजकल अमरिका में मसाचुएट्स प्रांत के लेक्सिंगटन शहर में रहते हैं एवं अपने व्याख्यानों के पूरी दुनिया की सैर पर रहते हैं।

नोम चॉम्स्की द्वारा प्रस्तावित नतीविवादी सिद्धांतए तर्क देती है कि भाषा एक अद्वितीय मानवीय उपलब्धि है। चोम्स्की कहते है कि सभी बच्चों को एक सहज भाषा अधिग्रहण डिवाइस ;एलएडीद्ध कहा जाता है। सैद्धांतिक रूप सेए एलएडी मस्तिष्क का एक क्षेत्र है जिसमें सभी भाषाओं के लिए सार्वभौमिक वाक्यविन्यास नियम हैं। यह उपकरण सीखी शब्दावली का उपयोग करके उपन्यास वाक्य बनाने की क्षमता वाले बच्चों को प्रदान करता है। चॉम्स्की का दावा यह विचार है कि जो बच्चे सुनते हैं.उनका भाषाई इनपुट.यह समझाने के लिए पर्याप्त नहीं है कि वे भाषा कैसे सीखते हैं। उनका तर्क है कि पर्यावरण से भाषाई इनपुट सीमित और त्रुटियों से भरा है। इसलिएए नितविवादियों का मानना है कि बच्चों के लिए अपने वातावरण से भाषाई जानकारी सीखना असंभव है। हालांकिए क्योंकि बच्चों के पास इस लैड हैए वे वास्तव मेंए उनके वातावरण से अपूर्ण जानकारी के बावजूद भाषा सीखने में सक्षम हैं। इस दृष्टिकोण ने पचास वर्षों से भाषाई सिद्धांत पर हावी है और अत्यधिक प्रभावशाली रहता हैए जैसा कि पत्रिकाओं और पुस्तकों में लेखों की संख्या के रूप में देखा गया है।

भाषा विज्ञान में योगदान चाम्सकीय भाषाविज्ञान की शुरुआत उनकी पुस्तक *सिंटैक्टिक स्ट्रक्चर्स* से हुई मानी जा सकती है जो उनके पीएचडी के शोधए *लाजिकल स्ट्रक्चर ऑफ लिंग्विस्टिक थीयरी* ;1955ए 75द्ध का परिमार्जित रूप था। इस पुस्तक के द्वारा चाम्सकी ने पूर्व स्थापित संरचनावादी भाषावैज्ञानिकों की मान्यताओं को चुनौती देकर ट्रांसफार्मेशनल ग्रामर की बुनियाद रखी। इस व्याकरण ने स्थापित किया कि शब्दों के समुच्य का अपना व्याकरण होता हैए जिसे औपचारिक व्याकरण द्वारा निरुपित किया जा सकता है और खासकर सन्दर्भमुक्त व्याकरण द्वारा जिसे *ट्रांसफार्मेशन* के नियमों द्वारा व्याख्यित किया जा सकता है। उन्होंने माना कि प्रत्येक मानव शिशु में व्याकरण की संरचनाओं का एक अंतर्निहित एवं जन्मजात ;आनुवांशिक रूप सेद्ध खाका होता है जिसे सार्वभौम व्याकरण की संज्ञा दी गयी। ऐसा तर्क दिया जाता है कि भाषा के ज्ञान का औपचारिक व्याकरण के द्वारा माडलिंग करने पर भाषा उत्पादकता के बारें में काफी जानकारी इकट्ठा की जा सकती हैए जिसके अनुसार व्याकरण के सीमित नियमों द्वारा कैसे असीमित वाक्य निर्माण कैसे संभव हो पाता है। चामस्की ने प्राचीन भारतीय वैय्याकरण पाणिनी के प्राचीन जेनेरेटिव ग्रामर के नियमों के महत्व भी स्वीकृत करते हैं। ,

चाम्सकी ने अपने प्रिंसिपल्स ऐंड पैरामीटरस का माड्ल अपने पीसा के व्याख्यान के बाद 1979 में विकसित की थी जो बाद में *लेक्चर्स आन गवर्नमेंट ऐंड बाइंडिंग* के नाम से प्रकाशित हुई। इसमें चाम्सकी ने सार्वभौम व्याकरण के बारे में काफी अकाट्य दावे एवं तर्क पेश किये।

जेनेरेटिव ग्रामर

चाम्स्कियन हाइरेरकी

ध्वनि विज्ञान में उनका सबसे अच्छा काम *द साउंड पैटर्न ऑफ इंग्लिश* हैए जो उन्होंने मारिस हाले के साथ मिलकर किया था। ;जिसे अक्सर 'च्' के नाम से जाना जाता हैद्धण

मनोविज्ञान में योगदान

भाषाविज्ञान में चाम्सकी के शोधों का सबसे ज्यादा प्रभाव मनोविज्ञान में पड़ा।

विज्ञान की सांस्कृतिक आलोचना पर उनके विचार

चाम्सकी का मानना है कि मानव सभ्यता का इतिहास जानने एवं मानव को समझने के लिए विज्ञान की समझ जरूरी है:

मुझे लगता है कि विज्ञान का अध्यन इतिहास समझने की दिशा में अच्छी शुरुआत हो सकती है क्योंकि विज्ञान के अध्यन से आप तर्कए प्रमाण इत्यादि को समझ सकते हैंए आपको विज्ञान के अध्यन से यह समझ आती है कि कौन सी अवधारणा किस आधार पर बनानी चाहिए और वह कितनी सही हो सकती है। आप जहाँ विज्ञान के अध्यन से विभिन्न तार्किक निष्पत्तियों को समझ सकते हैं वहीं अगर आप इतिहास में सापेक्षता सिद्धांत का प्रयोग करना चाहते हैं तो यह आपको कहीं नहीं ले जा सकता। इसलिए विज्ञान को आप सोचने का एक तरीका मान सकते हैं।

लेती है न कि खुले बलप्रयोग इत्यादि की।भाषा की प्रकृति ृ भाषा विचारों का आदान प्रदान करने का माध्यम होती है अतः इनके अनेक पक्ष हो सकते हैं हरलाक ने लिखा है भाषा से तात्पर्य विचारों तथा अनुभूतियों का अर्थ व्यक्त करने वाले उन सभी साधनों से है जिसमें संज्ञान या विचारों के आदान-प्रदान के सभी पक्ष जैसे लिखना बोलना संकेत चेहरे के विवेक हाव-भाव मूक अभिनय एवं कला इत्यादि सम्मिलित है। शैफर एवं किप के अनुसार भाषा का आशय ऐसे कुछ अर्थहीन व्यक्ति प्रति को ध्वनियों अक्षरों हाव-भाव से है जिन्हें किन्हीं मान्य नियमों के आधार पर संयुक्त करके असंख्य संदेशों का संप्रेषण कर सकते हैं इस प्रकार स्पष्ट हो रहा है कि भाषा शब्द का अर्थ बहुत ही व्यापक एवं चैटिंग हुई है विचारों तथा भाव को व्यक्त करने वाले सभी माध्यम या साधन जिनके द्वारा हम एक दूसरे के संपर्क में रहतेभाषा की प्रकृति ृ भाषा विचारों का आदान प्रदान करने का माध्यम होती है अतः इनके अनेक पक्ष हो सकते हैं हरलाक ने लिखा है भाषा से तात्पर्य विचारों तथा अनुभूतियों का अर्थ व्यक्त करने वाले उन सभी साधनों से है जिसमें संज्ञान या विचारों के आदान-प्रदान के सभी पक्ष जैसे लिखना बोलना संकेत चेहरे के विवेक हाव-भाव मूक अभिनय एवं कला इत्यादि सम्मिलित है। शैफर एवं किप के अनुसार भाषा का आशय ऐसे कुछ अर्थहीन व्यक्ति प्रति को ध्वनियों अक्षरों हाव-भाव से है जिन्हें किन्हीं मान्य

नियमों के आधार पर संयुक्त करके असंख्य संदेशों का संप्रेषण कर सकते हैं इस प्रकार स्पष्ट हो रहा है कि भाषा शब्द का अर्थ बहुत ही व्यापक एवं चैटिंग हुई है विचारों तथा भाव को व्यक्त करने वाले सभी माध्यम या साधन जिनके द्वारा हम एक दूसरे के संपर्क में रहते हैं।

संदर्भ.

- **शिक्षा मनोविज्ञान. डॉ एस के मंगल**
- **उच्चतर शिक्षा मनोविज्ञान. डॉ एस पी गुप्ता**
- **विकिपीडि या**
- चोम्स्की, एन। (1980)। नियम और अभ्यावेदन। ऑक्सफोर्ड: ब्लैकवेल.
- व्हाइट, एल।, और व्हाइट, एल। (2003)। दूसरी भाषा अधिग्रहण और सार्वभौमिक व्याकरण। कैम्ब्रिज यूनिवर्सिटी प्रेस.
- शिक्षा मनोविज्ञान की विधियां. डॉ ए के